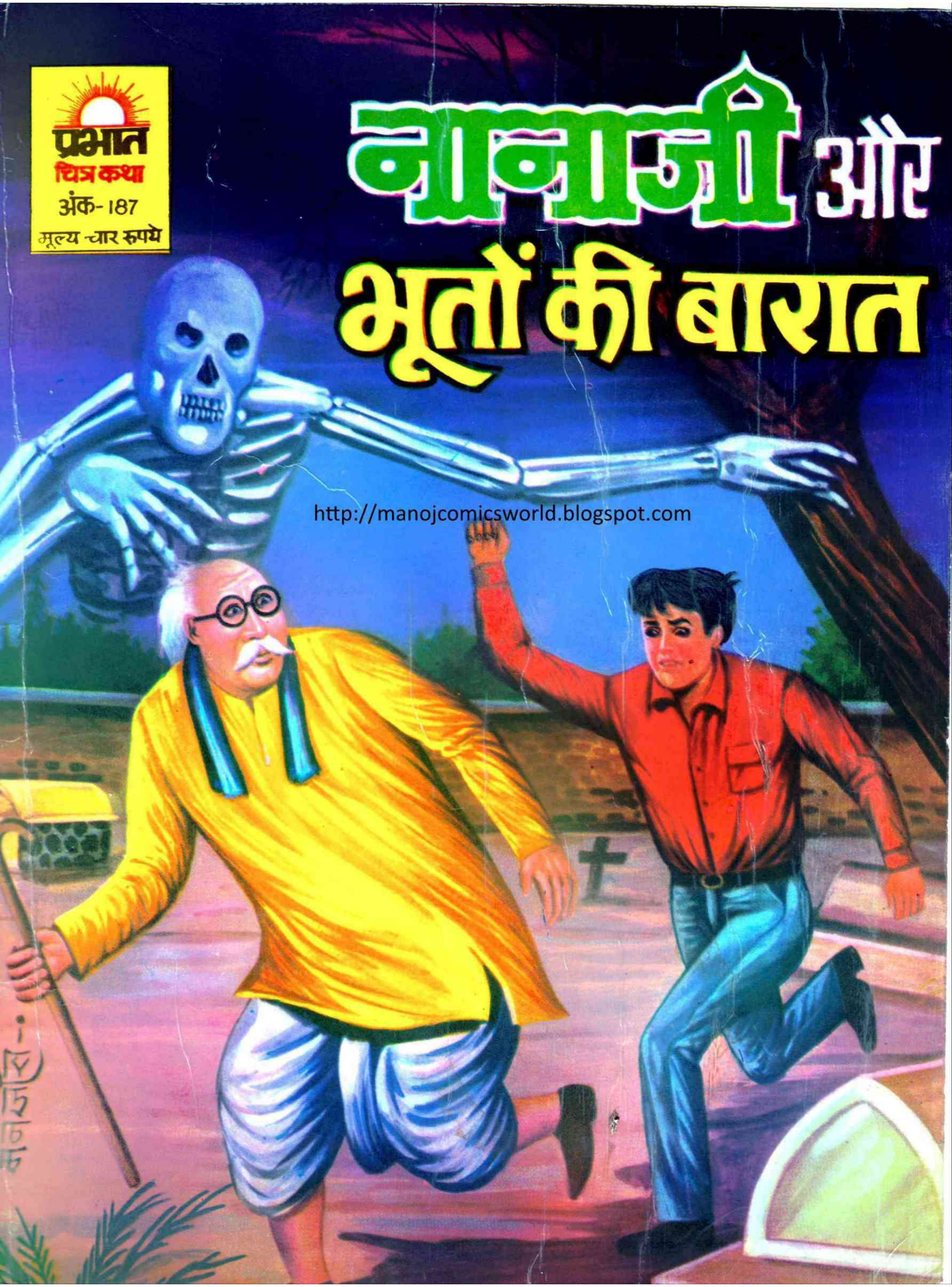

प्रभात
चित्र कथा
अंक- 187
मूल्य -चार रूपये
नानाजी और
भूतों की बारात

प्रभात चित्रकथा के नये सैट की पुस्तकें

नानाजी और भूतों की बारात

टाईगर और हीरों की डकैती

लाल बुझक्कड और नकली औरत

राजा राणा और बैंक डकैत

कटा हुआ सर

जादूगरनी का प्रतिशोध

आगामी आकर्षण

नानाजी और ट्रांजिस्टर बम

टाईगर और जंगल किंग

लाल बुझक्कड और तस्कर सम्राट

मूर्ख बेटे

राज षडयन्त्र

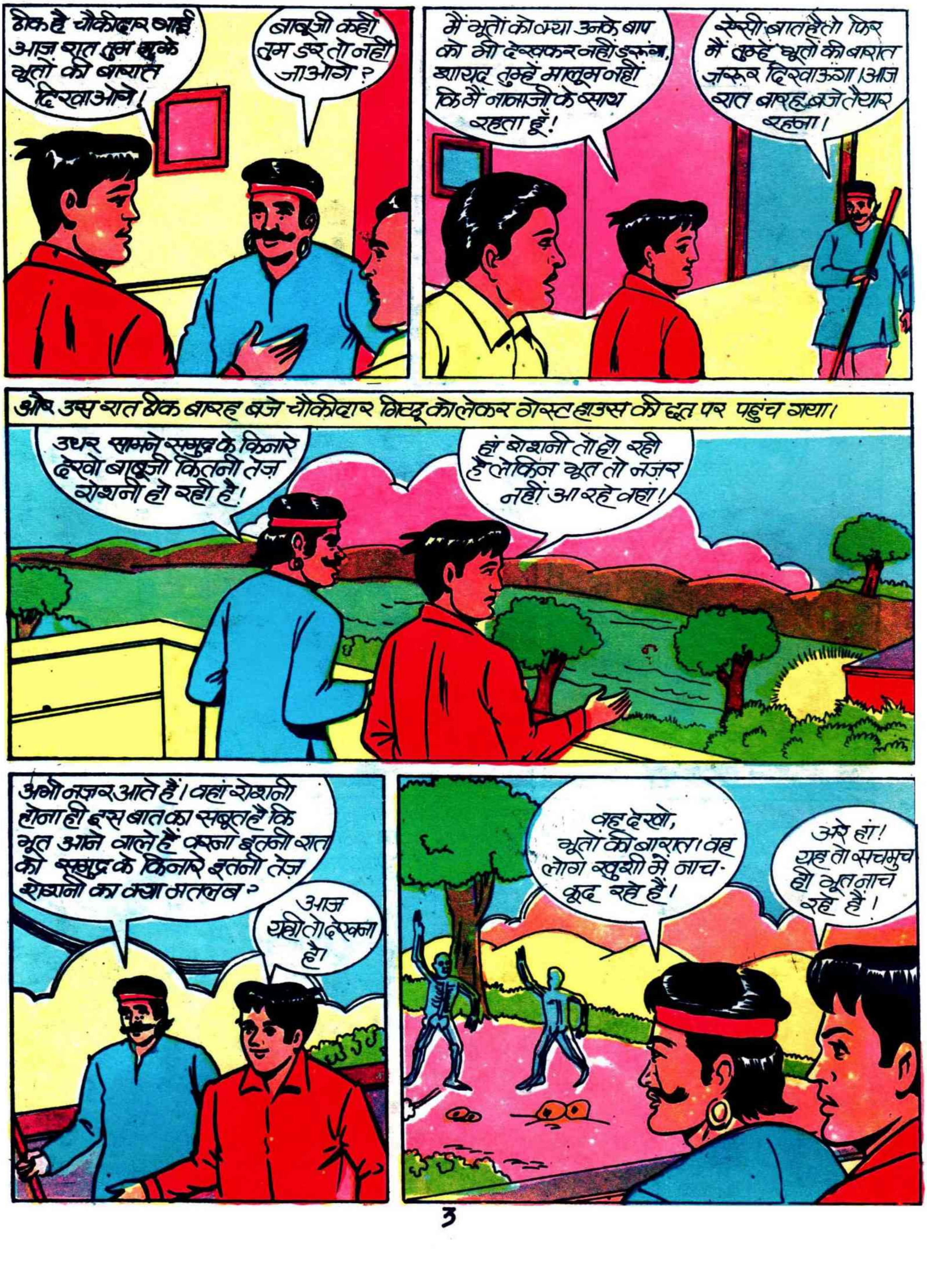
फूलकुमारी का न्याय

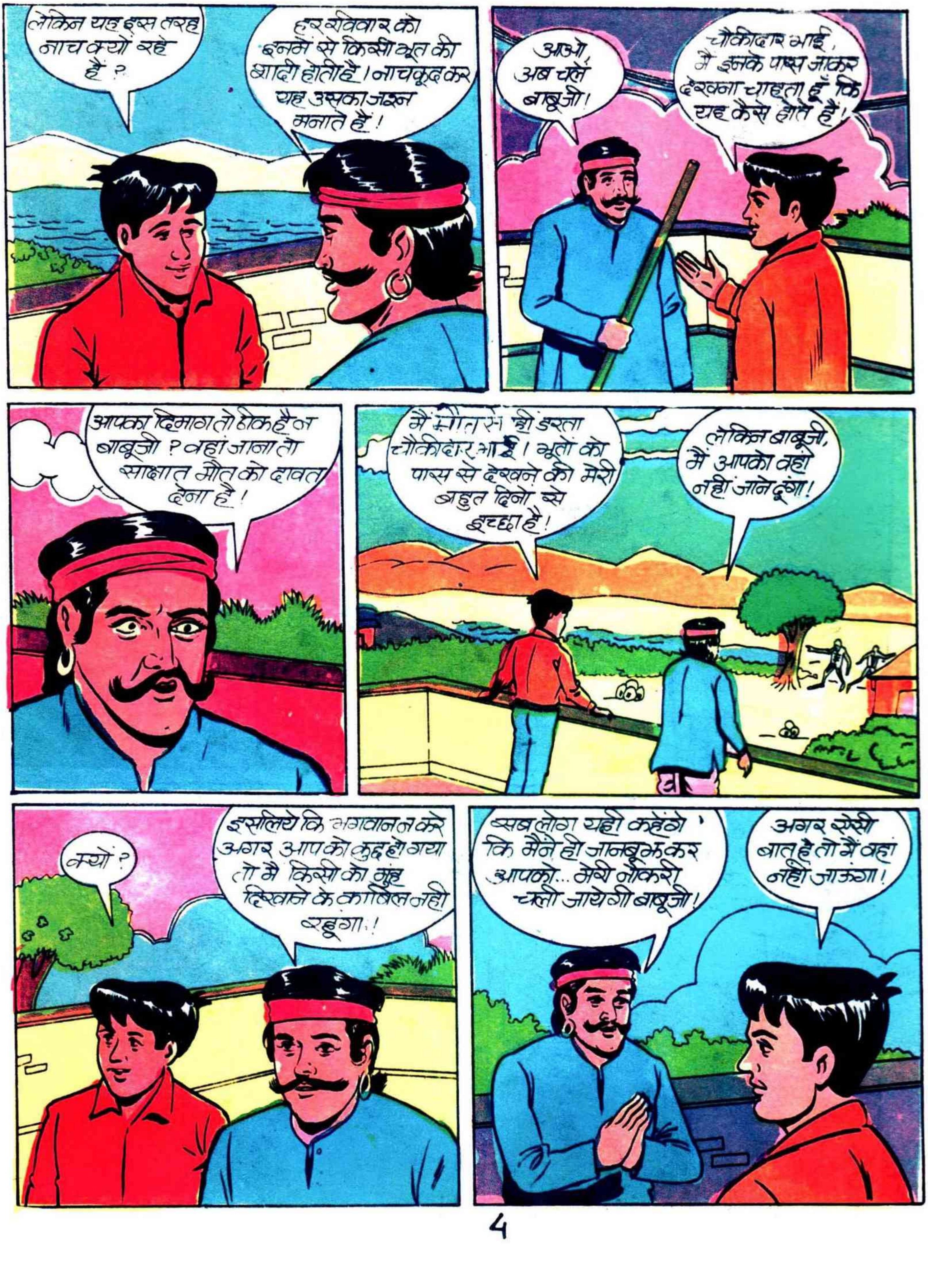
१६६ नानाजी और गंगू नाई ४)
१७० टाईगर और लाल गुलाब ४)
१७१ लाल बुझक्कड़ उल्टे लटके ४)
१७२ नाग रानी का उपहार ४)
१७३ अटकल पटकल, चमत्कारी तेल ४)
१७४ ठगनी ४)
१७५ नानाजी और बुसली का चेला ४)
१७६ टाईगर और खूनी शैतान ४)
१७७ लाल बुझक्कड और शेख जी ४)
१७८ पाताल भैरवी ४)
१७९ रोमू और खूंखार एजेन्ट ४)
१८० धर्मपुत्र ४)
१८१ नानाजी और ठगनी औरत ४)
१८२ टाईगर और युद्ध विराम ४)
१८३ लाल बुझक्कड़ और दुष्ट मंत्री ४)
१८४ अटकल पटकल अनोखा केक ४)
१८५ रोमू और आग का पंछी ४)
१८६ लालची पंडित ४)



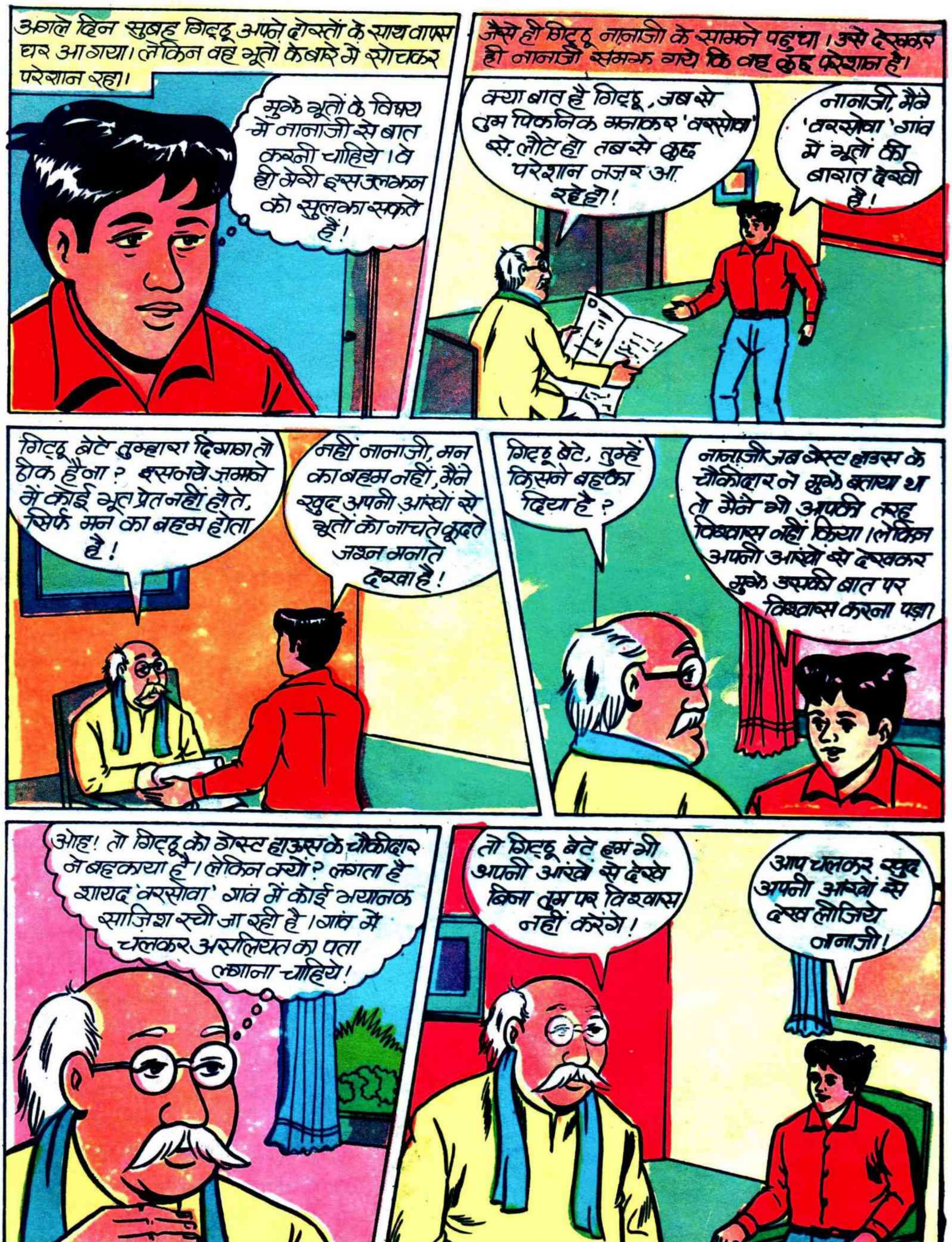
http://manojcomicsworld.blogspot.com


सुनो चौकीदार हम दोनों घूमने जा रहे हैं। बावर्ची से कहना हम खाना आकर खायेंगे!
और हमारे साथियों को भी बता देना कि हम दोनों समुद्र के किनारे घूमने गये हैं।
आप घूमने तो जा रहे हैं बाबूजी, लेकिन शाम होने से पहले तक अवश्य लौट आना!
शाम होने से पहले ही क्यों?
बाबूजी इस गांव में हर रविवार की रात को भूतों की बरात आती है। और पूरी रात तक उनकी शादी का जश्न चलता है!
भ..भूत?
चौकीदार भाई, तुम हमे क्यों झूठमूठ डरा रहे हो?
मैं सच कह रहा हूँ बाबूजी। आप अपनी आंखों से आज रात भूतों की बारात देख सकते हैं!
हमें भूतों की बारात किस जगह से नजर आयेगी?
आप गेस्ट हाउस की छत पर चढ़कर बड़े मजे से भूतों को नाचते कूदते देख सकते हैं।
ठीक है। हम आज रात भूतों की बारात जरूर देखेंगे।
भूतों का नाम सुनकर नन्दू की हालत खराब हो जाती है!
लेकिन गिट्टू मैं नहीं देखूंगा। मुझे भूतों के नाम से ही डर लगता है। देखने से तो मैं मर ही जाऊंगा!
मत देखना डरपोक कहीं के। मैं और चौकीदार ही देख लेंगे।

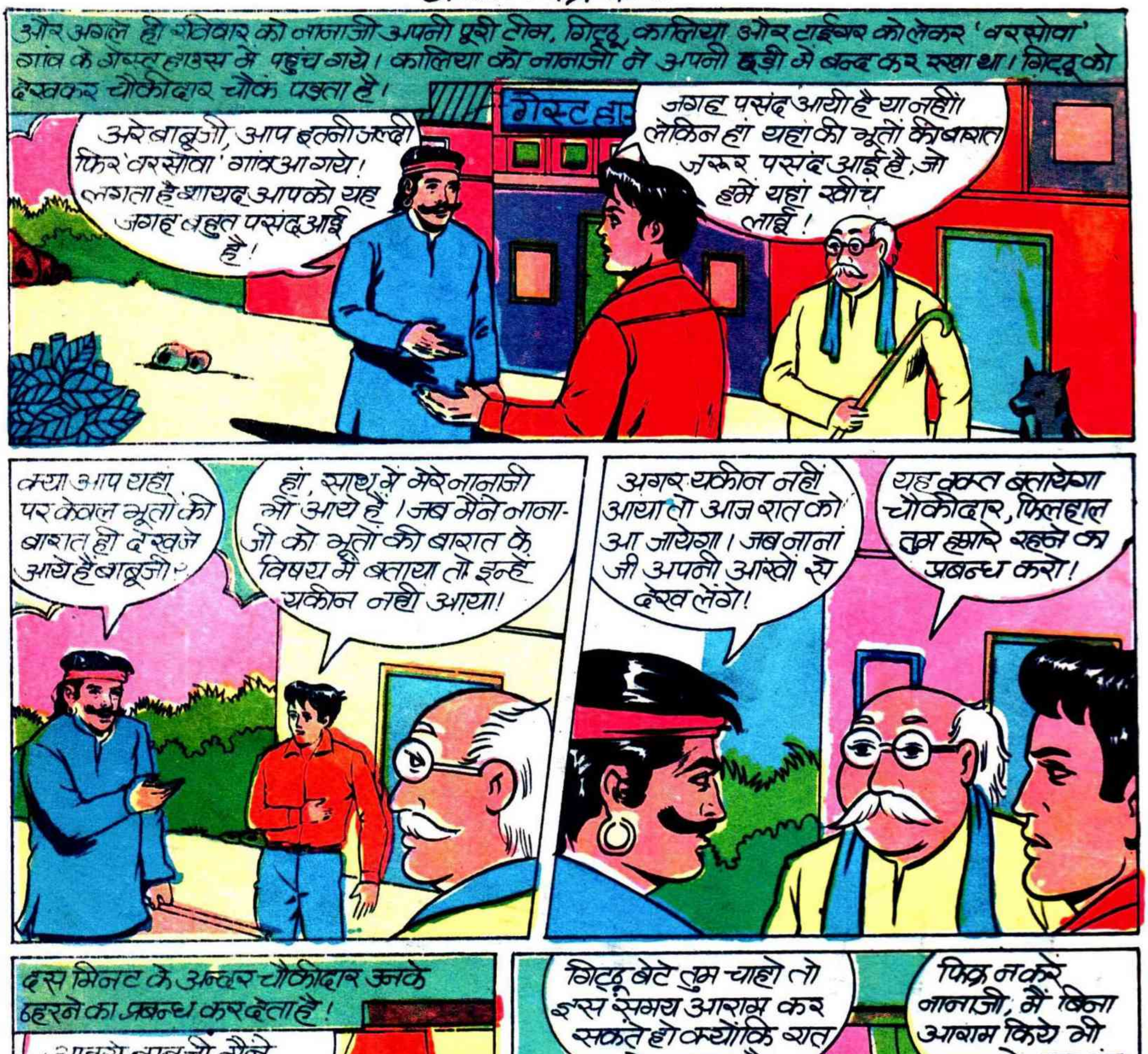

ठीक है चौकीदार भाई आज रात तुम मुझे भूतों की बारात दिखाओगे।
बाबूजी कहीं तुम डर तो नहीं जाओगे?
मैं भूतों को क्या उनके बाप को भी देखकर नहीं डरूंगा, शायद तुम्हें मालूम नहीं कि मैं नानाजी के साथ रहता हूँ!
ऐसी बात है तो फिर मैं तुम्हें भूतों की बारात जरूर दिखाऊंगा। आज रात बारह बजे तैयार रहना।
और उस रात ठीक बारह बजे चौकीदार गिट्टू को लेकर गेस्ट हाउस की छत पर पहुंच गया।
उधर सामने समुद्र के किनारे देखो बाबूजी कितनी तेज़ रोशनी हो रही है!
हां रोशनी तो हो रही है लेकिन भूत तो नज़र नहीं आ रहे वहां!
अभी नज़र आते हैं। वहां रोशनी होना ही इस बात का सबूत है कि भूत आने वाले हैं वरना इतनी रात को समुद्र के किनारे इतनी तेज़ रोशनी का क्या मतलब?
आज यही तो देखना है।
वह देखो, भूतों की बारात। वह लोग खुशी में नाच-कूद रहे हैं।
अरे हां! यह तो सचमुच ही भूत नाच रहे हैं।


लेकिन यह इस तरह नाच क्यों रहे हैं ?
हर रविवार को इनमें से किसी भूत की शादी होती है। नाचकूद कर यह उसका जश्न मनाते हैं!
आओ, अब चलें बाबूजी!
चौकीदार भाई, मैं इनके पास जाकर देखना चाहता हूँ कि यह कैसे होते हैं!
आपका दिमाग तो ठीक है न बाबूजी ? वहां जाना तो साक्षात मौत को दावत देना है!
मैं मौत से नहीं डरता चौकीदार भाई। भूतों को पास से देखने की मेरी बहुत दिनों से इच्छा है!
लेकिन बाबूजी, मैं आपको वहां नहीं जाने दूंगा!
क्यों ?
इसलिये कि भगवान न करे अगर आपको कुछ हो गया तो मैं किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहूंगा!
सब लोग यही कहेंगे कि मैंने ही जानबूझ कर आपको... मेरी नौकरी चली जायेगी बाबूजी!
अगर ऐसी बात है तो मैं वहां नहीं जाऊंगा!


इन भूतों को देखने के लिये अब मुझे किसी रविवार को चुपचाप अकेले आना पड़ेगा!
आओ बाबूजी, अब चलें। बहुत रात हो गयी है।
यह भूतों का जश्न रात को किस समय तक चलेगा?
ठीक दो बजे यह जश्न खत्म हो जायेगा!
अब दो बजने में ज्यादा देर नहीं है। आज इनका पूरा जश्न देखकर ही यहां से हटेंगे।
जैसी आप की इच्छा, बाबूजी!
गिट्टू बहुत तेज़ रोशनी में भूतों को नाचते हुए देखता रहा। लेकिन ठीक दो बजे उनका नाच बन्द हो गया और अंधेरा छा गया। इस समय इधर देखकर कोई कह भी नहीं सकता था कि अभी क्षण भर पहले तेज़ रोशनी में जश्न मनाया जा रहा था।
अरे वहां तो एकदम ही अन्धेरा छा गया। सारे भूत गायब हो गये।
भूतों को गायब होने में कितनी देर लगती है? अब ठीक दो बजे होंगे, बाबूजी!
हां, इस समय ठीक दो बजे हैं। समय के बड़े पाबन्द लगते हैं ये भूत!

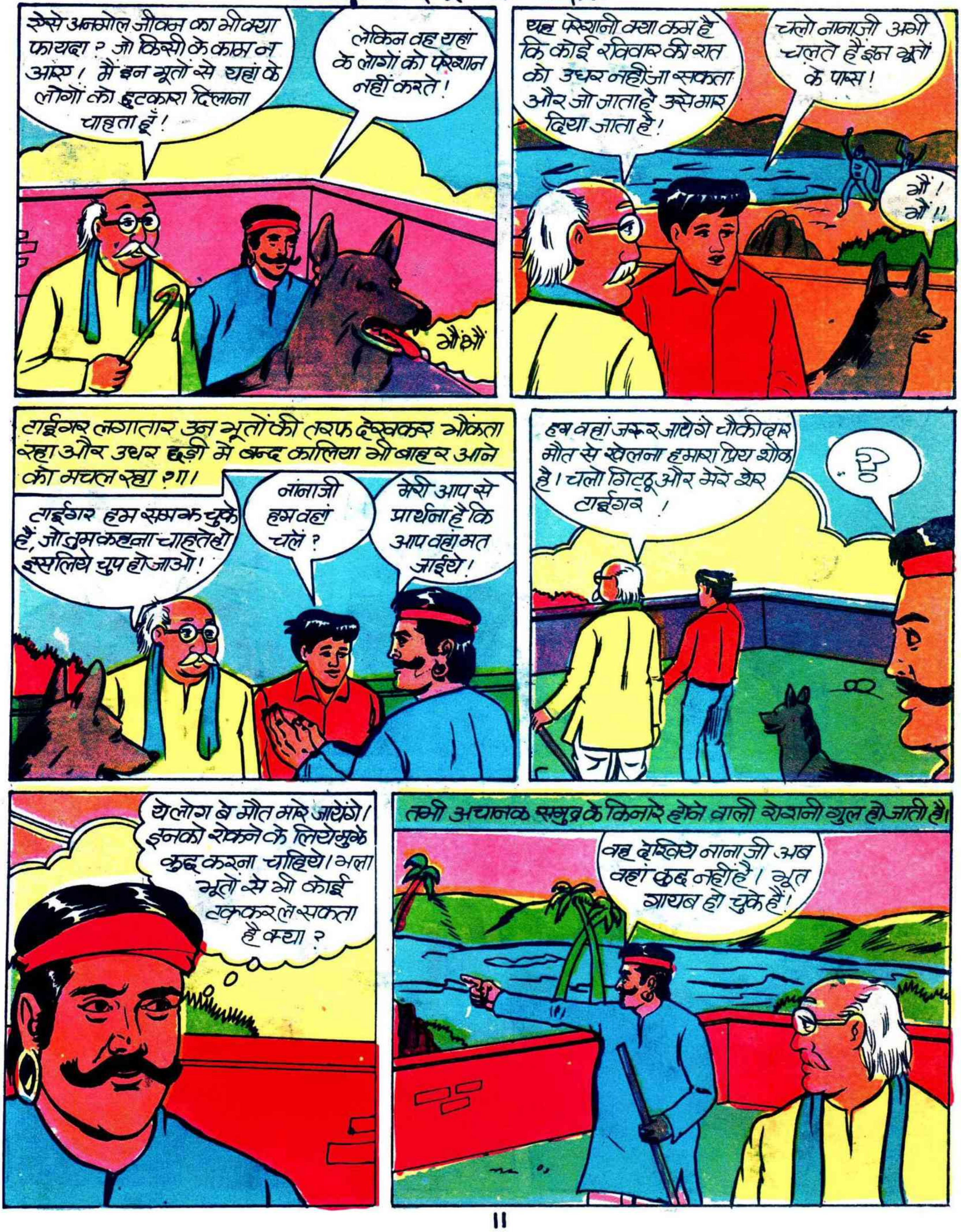

अगले दिन सुबह गिट्टू अपने दोस्तों के साथ वापस घर आ गया। लेकिन वह भूतों के बारे में सोचकर परेशान रहा।
मुझे भूतों के विषय में नानाजी से बात करनी चाहिये। वे ही मेरी इस उलझन को सुलझा सकते हैं!
जैसे ही गिट्टू नानाजी के सामने पहुंचा। उसे देखकर ही नानाजी समझ गये कि वह कुछ परेशान है।
क्या बात है गिट्टू, जब से तुम पिकनिक मनाकर 'वरसोवा' से लौटे हो तब से कुछ परेशान नज़र आ रहे हो!
नानाजी, मैंने 'वरसोवा' गांव में भूतों की बारात देखी है।
गिट्टू बेटे तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ना? इस नये ज़माने में कोई भूत प्रेत नहीं होते, सिर्फ मन का बहम होता है!
नहीं नानाजी, मन का बहम नहीं, मैंने खुद अपनी आंखों से भूतों को नाचते कूदते जश्न मनाते देखा है!
गिट्टू बेटे, तुम्हें किसने बहका दिया है?
नानाजी जब गेस्ट हाउस के चौकीदार ने मुझे बताया था तो मैंने भी आपकी तरह विश्वास नहीं किया। लेकिन अपनी आंखों से देखकर मुझे उसकी बात पर विश्वास करना पड़ा।
ओह! तो गिट्टू को गेस्ट हाउस के चौकीदार ने बहकाया है। लेकिन क्यों? लगता है शायद 'वरसोवा' गांव में कोई भयानक साजिश रची जा रही है। गांव में चलकर असलियत का पता लगाना चाहिये।
तो गिट्टू बेटे हम भी अपनी आंखों से देखे बिना तुम पर विश्वास नहीं करेंगे!
आप चलकर खुद अपनी आंखों से देख लीजिये नानाजी!

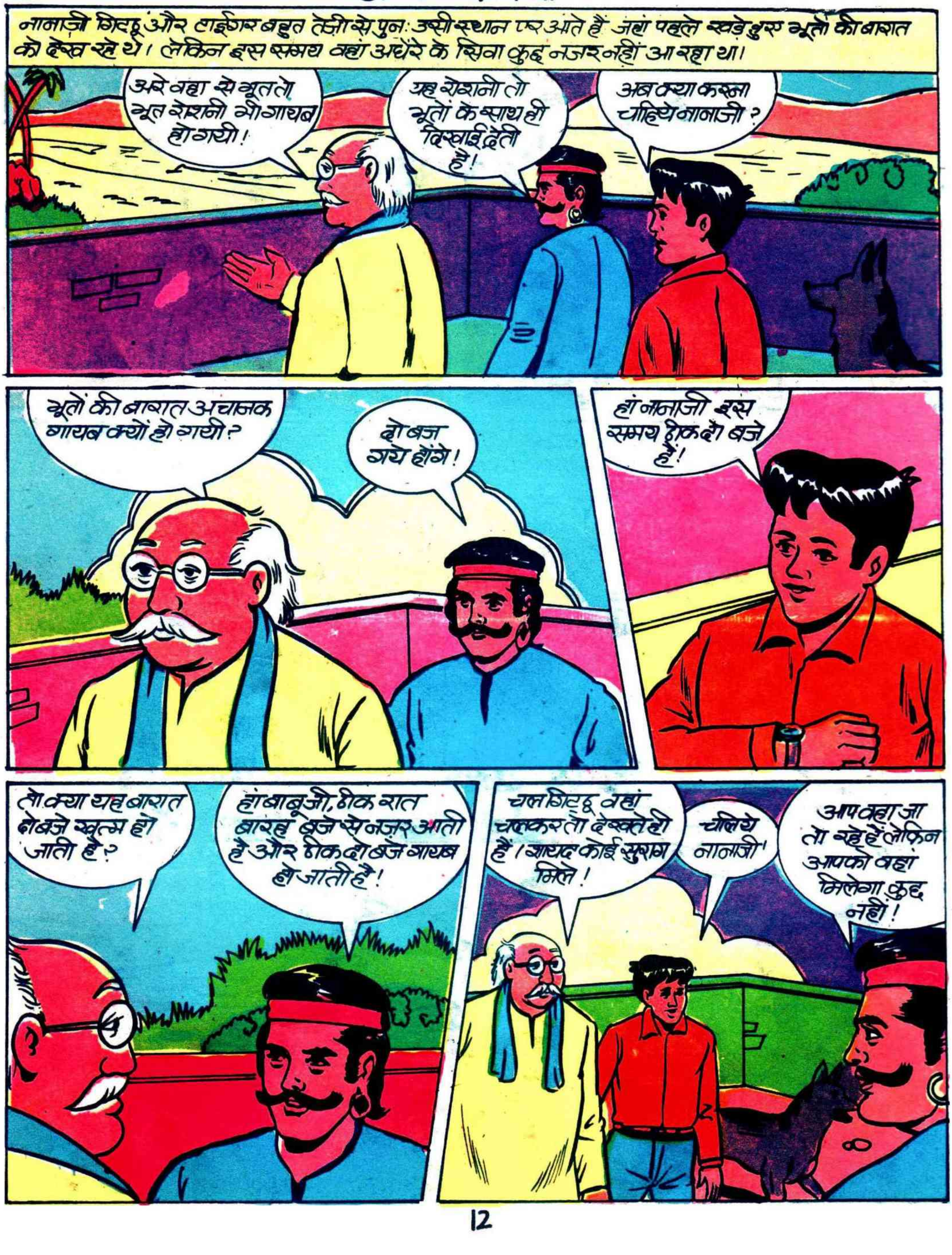

अगर ऐसी बात है तो आज ही चलकर देख लेते हैं उस भूतों की बारात को और साथ ही उनकी शादी की दावत भी खा आयेंगे!
आज नज़र नहीं आयेंगे भूत!
क्यों, आज शादी ब्याह के लिये दिन अच्छा नहीं है क्या? या किसी पण्डित ने मना कर दिया।
भूतों की बारात केवल रविवार की रात को ही नजर आती है!
इसका मतलब है कि रविवार की रात को ही वहां कोई विशेष बात होती है जिसके लिये भूतों की बारात दिखाकर वहां सबको आतंकित किया जाता है!
ठीक है गिट्टू अगर भूतों की बारात रविवार की रात को ही नज़र आती है तो हम इस रविवार को ही उनकी बारात में शामिल होंगे!
नानाजी, मैं भी आपके साथ चलूंगा!
इसमें कहने की बात क्या है गिट्टू? हमारी पूरी टीम चलेगी भूतों की बारात देखने।
हां नानाजी, भूतों को पास से देखने की मेरी बहुत इच्छा है।
तुम्हारी यह इच्छा जरूर पूरी होगी।
अहा! मजा आ गया। मैं भूतों को पास से देखूंगा!


और अगले ही रविवार को नानाजी अपनी पूरी टीम, गिट्टू, कालिया और टाईगर को लेकर 'वरसोवा' गांव के गेस्ट हाउस में पहुंच गये। कालिया को नानाजी ने अपनी छड़ी में बन्द कर रखा था। गिट्टू को देखकर चौकीदार चौंक पड़ता है।
अरे बाबूजी, आप इतनी जल्दी फिर 'वरसोवा' गांव आ गये! लगता है शायद आपको यह जगह बहुत पसंद आई है!
जगह पसंद आयी है या नहीं! लेकिन हां यहां की भूतों की बारात जरूर पसंद आई है, जो हमें यहां खींच लाई है!
क्या आप यहां पर केवल भूतों की बारात ही देखने आये हैं बाबूजी?
हां, साथ में मेरे नानाजी भी आये हैं। जब मैंने नानाजी को भूतों की बारात के विषय में बताया तो इन्हें यकीन नहीं आया!
अगर यकीन नहीं आया तो आज रात को आ जायेगा। जब नाना जी अपनी आंखों से देख लेंगे!
यह वक्त बतायेगा चौकीदार, फिलहाल तुम हमारे रहने का प्रबन्ध करो!
दस मिनट के अन्दर चौकीदार उनके ठहरने का प्रबन्ध कर देता है!
आइये बाबूजी मैंने आपके रहने का प्रबन्ध कर दिया है!
गिट्टू बेटे तुम चाहो तो इस समय आराम कर सकते हो क्योंकि रात को जागना है।
फिक्र न करें नानाजी, मैं बिना आराम किये भी रात को जाग लूंगा!


रात होते ही नानाजी, गिट्टू, टाईगर और चौकीदार गेस्ट हाउस की छत पर पहुंच गये और समुद्र की तरफ उत्सुकता भरी नज़रों से देख रहे थे। जिसके किनारे पर भूतों की बारात नज़र आनी थी।
वैसे इस समय उन्हें देखना है बिल्कुल बेकार हो। रात को बारह बजे से पहले भूतों की बारात नजर नहीं आयेगी।
लगता है यह भूत समय की पाबन्दी में अंग्रेजों के भी बाप हैं!
बेचैन क्यों होते हो गिट्टू बेटे अब बारह बजने में समय ही कितना है?
ठीक बारह बजे समुद्र के किनारे का एक भाग बहुत तेज रोशनी से जगमगा उठता है।
वह देखिये नानाजी, बारह बजते ही वहां कितनी तेज़ रोशनी हो गयी है!
लेकिन भूत तो कहीं नज़र नहीं आ रहे हैं वहां पर!
अभी नज़र आयेंगे, फिलहाल तो जश्न की तैयारियां चल रही हैं!
लो आपके कहते ही भूत भी नज़र आ गये!
देखिये नानाजी कितने मज़े से नाच रहे हैं वह बारात में!
देख तो रहा हूं लेकिन मुझे यह कोई साज़िश नज़र आ रही है।

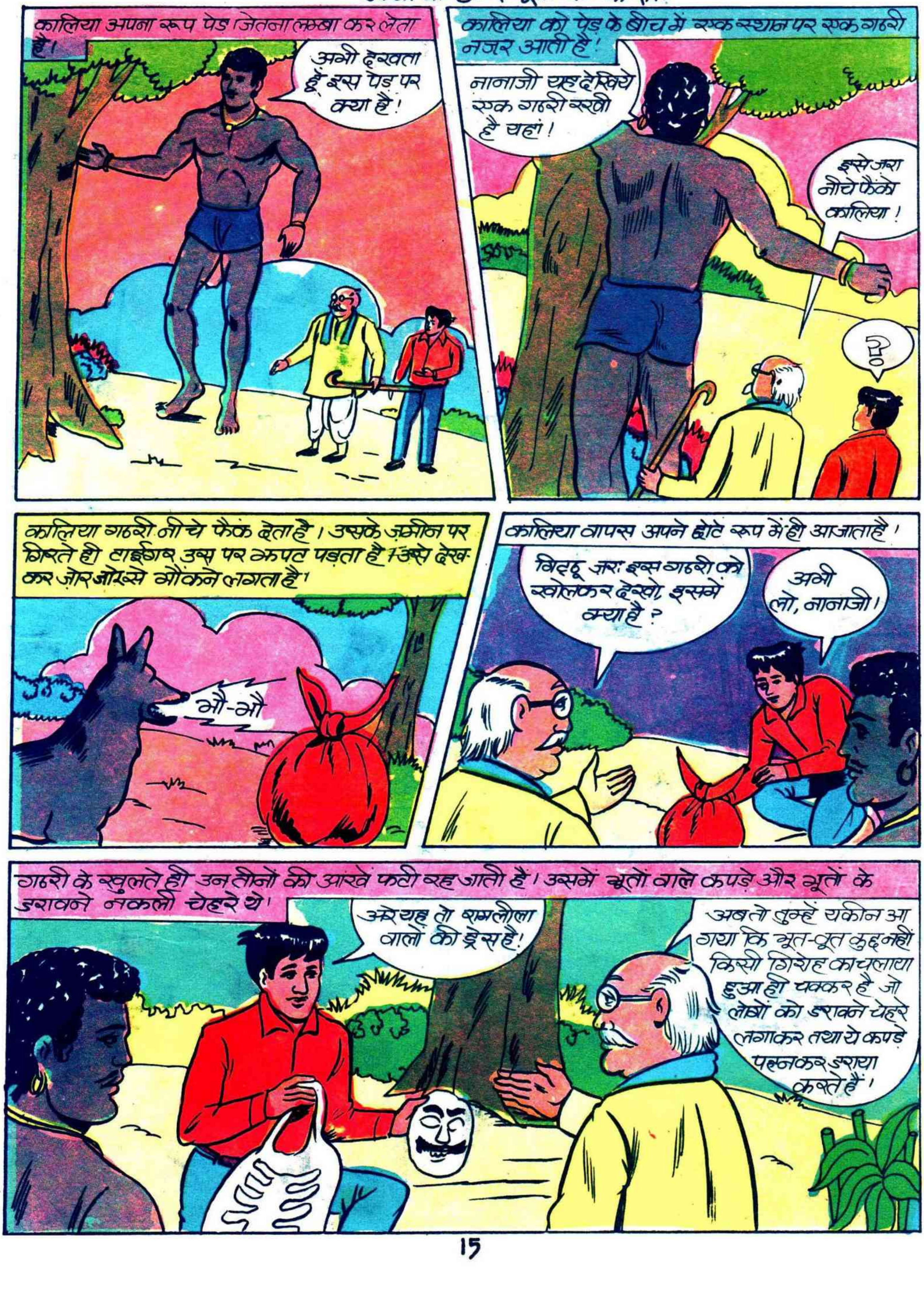

भूत तो भूत ही होते हैं। इसमें साज़िश वाली क्या बात हो गयी नानाजी?
मैं भूतों पर विश्वास नहीं करता। इन भूतों की बारात के पीछे मुझे किसी व्यक्ति की साज़िश लगती है!
नानाजी इन भूतों को पास चलकर देखना चाहिये!
तभी टाईगर ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगता है!
भौं भौं
अचानक यह कुत्ता इस तरह क्यों भौंकने लगा?
टाईगर इस तरह तभी भौंकता है - जब उसे किसी खतरे का आभास होता है!
इसका मतलब दाल में अवश्य कुछ काला है!
भौं भौं
चौकीदार इस गांव के या अन्य किसी व्यक्ति ने वहां जाकर देखने की कोशिश की है कभी?
जिन लोगों ने शुरु में कोशिश की उनकी सुबह को समुद्र के किनारे लाश पड़ी मिली। इसलिये अब यह कोशिश करके कोई और मरना नहीं चाहता।
और अगर हम यह कोशिश करना चाहें तो?
मैं तो आपको यही सलाह दूंगा कि आप यह विचार अपने दिमाग से निकाल दें तो अच्छा होगा। आपका जीवन लोगों के लिये बहुत अनमोल है नानाजी।

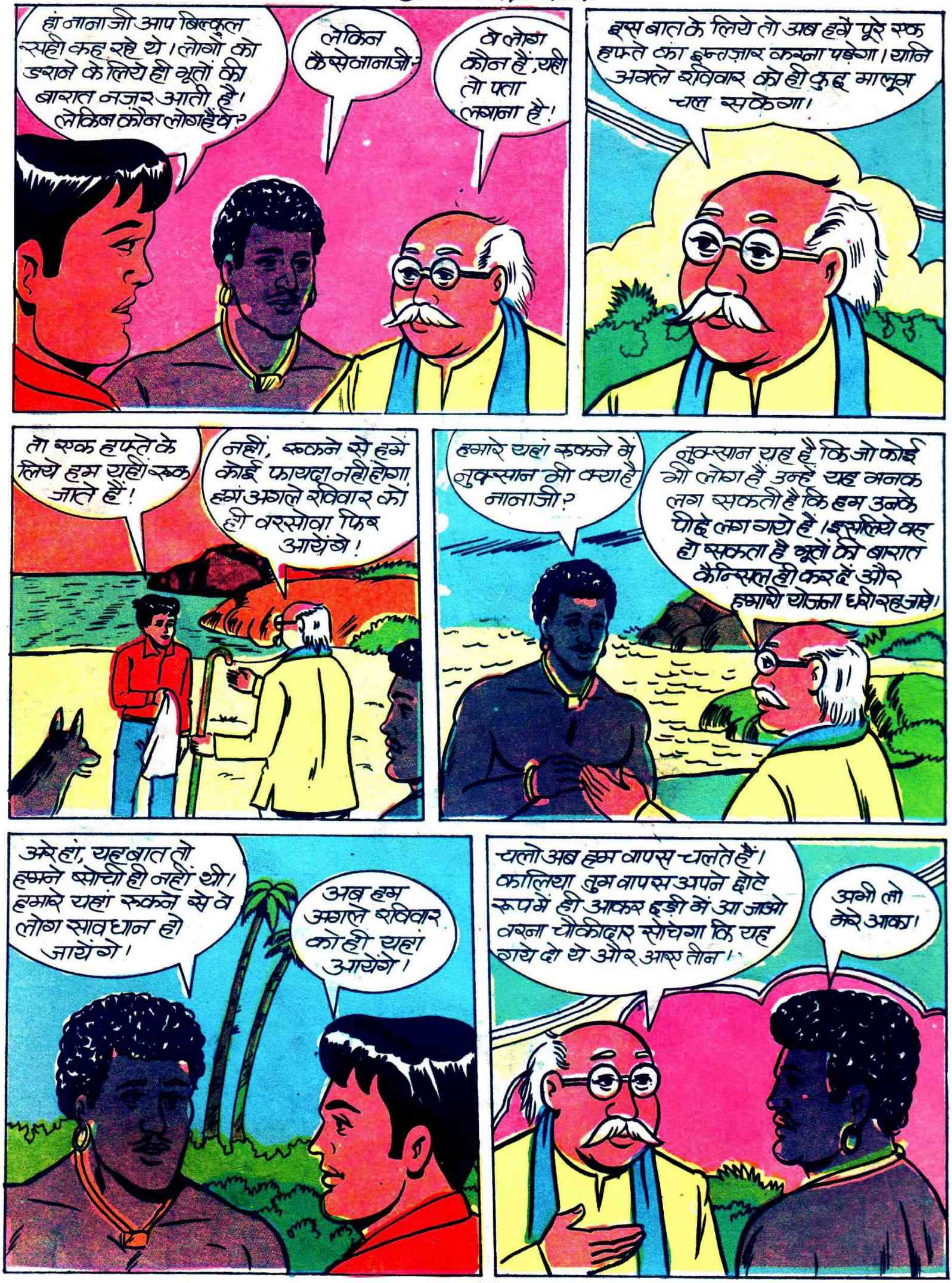

ऐसे अनमोल जीवन का भी क्या फायदा ? जो किसी के काम न आए ! मैं इन भूतों से यहां के लोगों को छुटकारा दिलाना चाहता हूँ !
लेकिन वह यहां के लोगों को परेशान नहीं करते !
भौं भौं
यह परेशानी क्या कम है कि कोई रविवार की रात को उधर नहीं जा सकता और जो जाता है उसे मार दिया जाता है !
चलो नानाजी अभी चलते हैं इन भूतों के पास !
भौं ! भौं !!
टाईगर लगातार उन भूतों की तरफ देखकर भौंकता रहा और उधर छड़ी में बन्द कालिया भी बाहर आने को मचल रहा था।
टाईगर हम समझ चुके हैं, जो तुम कहना चाहते हो इसलिये चुप हो जाओ !
नानाजी हम वहां चलें ?
मेरी आप से प्रार्थना है कि आप वहां मत जाईये !
हम वहां जरूर जायेंगे चौकीदार मौत से खेलना हमारा प्रिय शौक है। चलो गिट्टू और मेरे शेर टाईगर !
ये लोग बे मौत मारे जायेंगे। इनको रोकने के लिये मुझे कुछ करना चाहिये। भला भूतों से भी कोई टक्कर ले सकता है क्या ?
तभी अचानक समुद्र के किनारे होने वाली रोशनी गुल हो जाती है।
वह देखिये नानाजी अब वहां कुछ नहीं है। भूत गायब हो चुके हैं !


नानाजी गिरदू और टाईगर बहुत तेजी से पुनः उसी स्थान पर आते हैं जहां पहले खड़े हुए भूतों की बारात को देख रहे थे। लेकिन इस समय वहां अंधेरे के सिवा कुछ नजर नहीं आ रहा था।
अरे वहा से भूत तो भूत रोशनी भी गायब हो गयी!
यह रोशनी तो भूतों के साथ ही दिखाई देती है!
अब क्या करना चाहिये नानाजी?
भूतों की बारात अचानक गायब क्यों हो गयी?
दो बज गये होंगे!
हां नानाजी इस समय ठीक दो बजे हैं!
तो क्या यह बारात दो बजे खत्म हो जाती है?
हां बाबूजी, ठीक रात बारह बजे से नजर आती है और ठीक दो बजे गायब हो जाती है!
चल गिरदू वहां चलकर तो देखते ही हैं। शायद कोई सुराग मिले!
चलिये नानाजी!
आप वहां जा तो रहे हैं लेकिन आपको वहां मिलेगा कुछ नहीं!


नानाजी गिट्टू और टाईगर टार्च लेकर समुद्र के किनारे उस जगह पहुंच जाते हैं जहां थोड़ी देर पहले तेज़ रोशनी में भूत नाचते नज़र आ रहे थे।
देखो गिट्टू गीले रेत में आदमियों के पैरों के निशान जो समुद्र तक जा रहे हैं!
इसका मतलब है कि भूत समुद्र में से आते हैं और फिर वहीं चले जाते हैं!
बेवकूफ मत बनो गिट्टू! भूत भूत कुछ नहीं हैं। यह किसी गिरोह की साज़िश लगती है मुझे जो भूतों के नाम पर गांव वालों को डराकर अपना कोई बहुत बड़ा मतलब हल करते हैं!
नानाजी मान नहीं रहे। वे थे तो भूत ही!
अचानक गीले रेत को सूंघते-सूंघते टाईगर भौंकता हुआ एक तरफ को चल देता है!
टाईगर शायद कुछ कहना चाहता है।
भौं! भौं!!
इसके पीछे पीछे चलकर देखना चाहिये कि यह क्या कहना चाहता है?
शायद टाईगर को किसी खतरे की सूंघ मिल गयी है।
भौं! भौं!
एक पेड़ के नीचे पहुंच कर टाईगर ऊपर को देखकर बहुत तेज़ भौंकने लगता है!

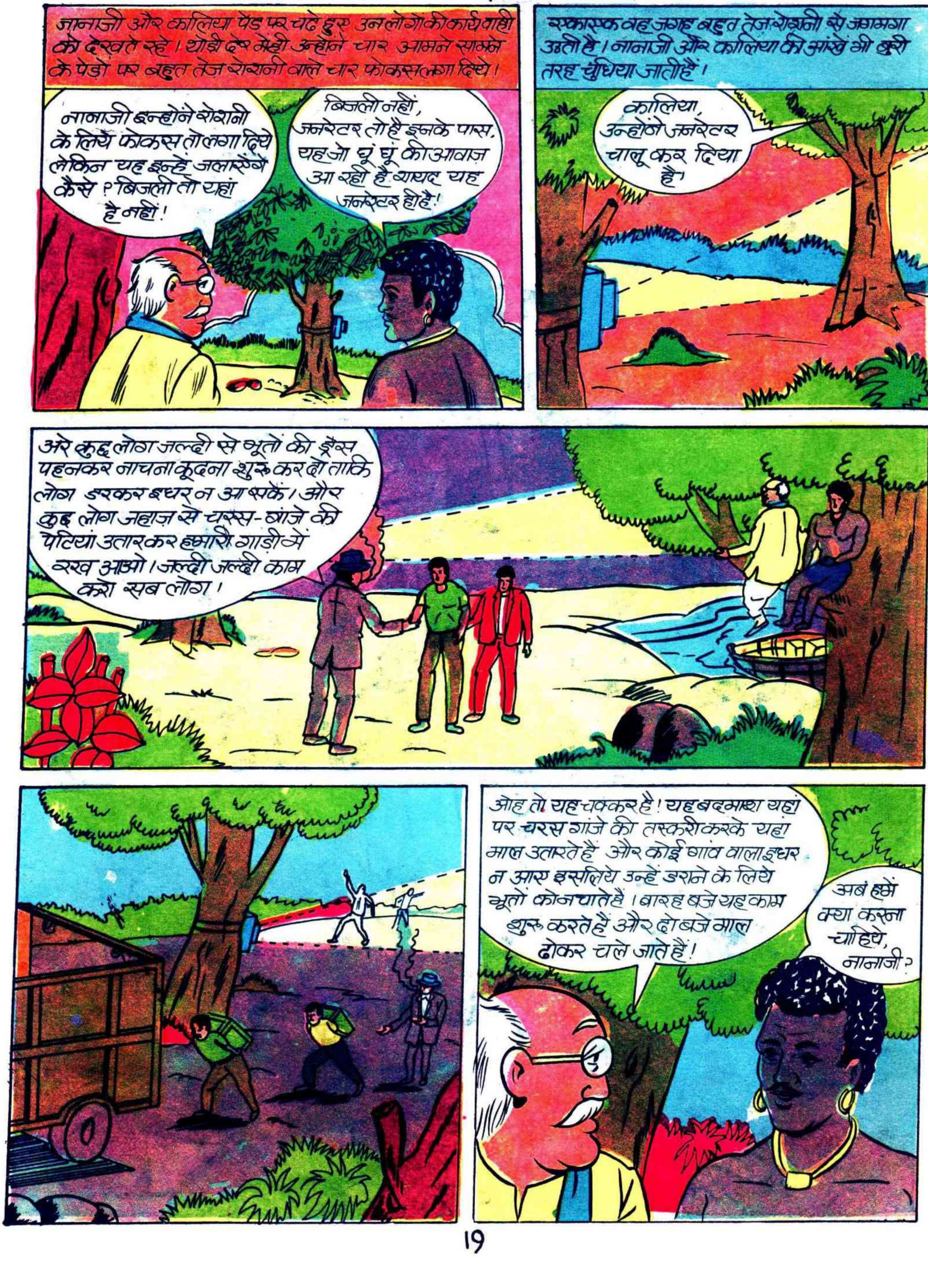

नानाजी टार्च की रोशनी उस पेड पर ऊपर तक डालते हैं!
इस पेड़ पर तो कुछ भी नज़र नही आ रहा!
कोई न कोई बात जरूर होगी! टाईगर का आईडिया कभी गलत नही हो सकता गिट्टू!
भौं भौं!
लेकिन इतने उचे पेड़ पर चढ़ा कैसे जाये नानाजी
इसका इलाज भी हमारे पास है- कालिया
अरे हां! कालिया को तो मैं भूल ही गया था!
चल कालिया बाहर निकलकर आ! अब तेरी ज़रूरत पड़ गयी है!
मैं तो कब से इस बात की इन्तज़ार कर रहा था कि बाहर आकर नानाजी की मदद करूं!
अब मेरे लिये क्या हुक्म है नानाजी?
तुम अपना रूप पेड़ जितना बड़ा करके इस पर देखो क्या चीज़ है। जिसकी टाईगर को सूंघ मिली है!


कालिया अपना रूप पेड़ जितना लम्बा कर लेता है।
अभी देखता हूं इस पेड़ पर क्या है!
कालिया को पेड़ के बीच में एक स्थान पर एक गठरी नजर आती है!
नानाजी यह देखिये एक गठरी रखी है यहां!
इसे जरा नीचे फैंको कालिया!
?
कालिया गठरी नीचे फैंक देता है। उसके ज़मीन पर गिरते ही टाईगर उस पर झपट पड़ता है। उसे देख कर ज़ोर ज़ोर से भौंकने लगता है।
भौं-भौं
कालिया वापस अपने छोटे रूप में ही आ जाता है।
बिट्टू जरा इस गठरी को खोलकर देखो, इसमें क्या है?
अभी लो, नानाजी।
गठरी के खुलते ही उन तीनों की आंखें फटी रह जाती हैं। उसमें भूतों वाले कपड़े और भूतों के डरावने नकली चेहरे थे।
अरे यह तो रामलीला वालों की ड्रेस है!
अब तो तुम्हें यकीन आ गया कि भूत-भूत कुछ नहीं किसी गिरोह का चलाया हुआ ही चक्कर है जो लोगों को डरावने चेहरे लगाकर तथा ये कपड़े पहनकर डराया करते हैं।

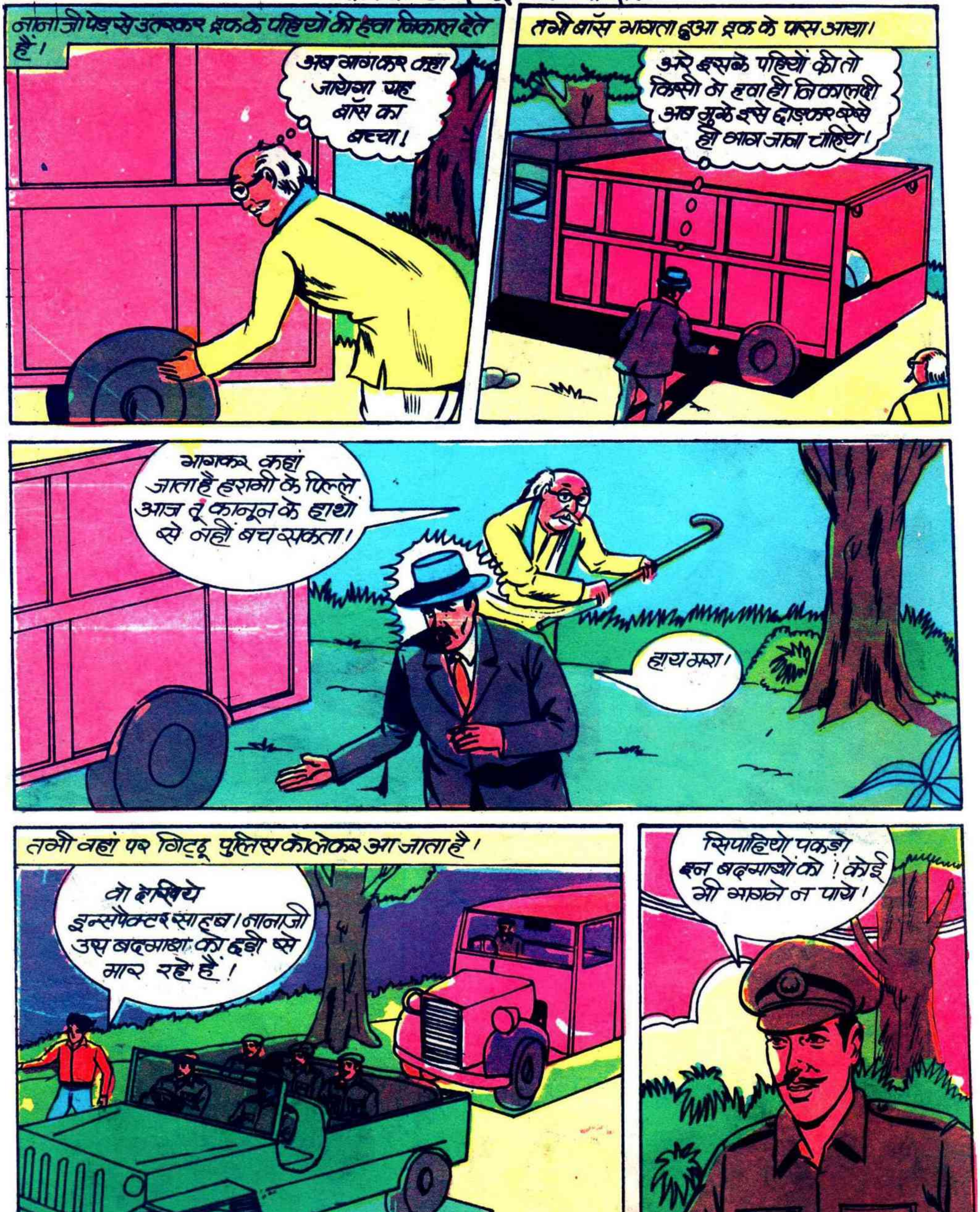

हां नानाजी आप बिल्कुल सही कह रहे थे। लोगों को डराने के लिये ही भूतों की बारात नजर आती है। लेकिन कौन लोग हैं वे?
लेकिन कैसे नानाजी?
वे लोग कौन हैं, यही तो पता लगाना है!
इस बात के लिये तो अब हमें पूरे एक हफ्ते का इन्तज़ार करना पड़ेगा। यानि अगले रविवार को ही कुछ मालूम चल सकेगा।
तो एक हफ्ते के लिये हम यहीं रुक जाते हैं!
नहीं, रुकने से हमें कोई फायदा नहीं होगा, हम अगले रविवार को ही वरसोवा फिर आयेंगे!
हमारे यहां रुकने में नुकसान भी क्या है नानाजी?
नुकसान यह है कि जो कोई भी लोग हैं उन्हें यह भनक लग सकती है कि हम उनके पीछे लग गये हैं। इसलिये वह हो सकता है भूतों की बारात कैन्सिल ही कर दें और हमारी योजना धरी रह जाये।
अरे हां, यह बात तो हमने सोची ही नहीं थी। हमारे यहां रुकने से वे लोग सावधान हो जायेंगे।
अब हम अगले रविवार को ही यहां आयेंगे।
चलो अब हम वापस चलते हैं। कालिया तुम वापस अपने छोटे रूप में ही आकर छड़ी में आ जाओ वरना चौकीदार सोचेगा कि यह गये दो थे और आए तीन।
अभी लो मेरे आका!


नानाजी की आज्ञा पाते ही कालिया अपना होला रूप बनाकर छड़ी में समा जाता है!
और नानाजी, बिट्टू और टाईगर वापस गेस्ट हाऊस में आ गये। वहां चौकीदार उन्हीं का इन्तजार कर रहा था।
बाबूजी कुछ मालूम चला?
नहीं!
नानाजी इस चौकीदार से झूठ क्यों बोल रहे हैं!
मैं तो आपसे पहले ही कहता था कि भूतों का आज तक कोई पता नहीं लगा पाया है!
हां भाई तुम सही कह रहे थे। भूतों का कोई पता नहीं लगा सकता।
नानाजी चौकीदार से लगातार झूठ बोल रहे हैं जरूर नानाजी कोई चाल चल रहे हैं।
मैं अब आपके सोने का प्रबन्ध करूं?
हां चौकीदार भाई, सोने का प्रबन्ध करो। बड़े जोर से नींद आ रही है और फिर सुबह को वापस अपने शहर भी लौटना है!
अभी करता हूँ, बाबूजी।
चौकीदार के जाने के बाद...
नानाजी आपने इससे झूठ क्यों बोला कि हमें कुछ पता नहीं लगा। इससे गठरी में बंधे कपड़े और डरावने चेहरों की बात क्यों छिपाई?
क्योंकि चौकीदार के द्वारा उन लोगों तक यह बात पहुंच सकती थी। जो यह काम कर रहे हैं। मैं चौकीदार को गठरी की बात बताकर उन लोगों को सावधान नहीं करना चाहता।


उस दिन वही रात को गेस्ट हाउस मे रुक कर अगले दिन सुबह नानाजी अपनी टीम के साथ वापस घर लौट आए।
नानाजी अब इन लोगो को पकड़वाने के लिये हमे क्या करना चाहिये!
इस बार हम गेस्ट हाउस नहीं जायेंगे। वरसोवा पहुच कर सीधे उसी जगह पर चलेंगे जहां भूतो की बारात नजर आती है। वहीं पर....
मैं और कालिया पेड़ पर चढ़े हुए होंगे। और तुम पास के पुलिस स्टेशन से ठीक साढ़े बारह बजे फोर्स लेकर पहुंचना!
नानाजी, योजना बनाने मे आपने कमाल कर दिया!
और पूरी योजना तैयार करके नानाजी अगले रविवार की शाम को ही वरसोवा गांव में पहुंचकर समुद्र के किनारे उस पेड़ पर चढ़कर बैठ गये जिसके नीचे भूत नाचते थे। कालिया उनके साथ था।
हमें साढ़े बारह बजे तक यू ही खामोश बैठे रहना है कालिया!
अब भूतों के आने मे कितनी देर है, नानाजी?
बस बारह बजने में केवल दस मिनट बाकी हैं।
अरे! वह देखिये नानाजी, समुद्र के किनारे पर एक छोटा सा जहाज़ आकर रुका है।


नानाजी और कालिया पेड़ पर चढ़े हुए उन लोगों की कार्यवाही को देखते रहे। थोड़ी देर में ही उन्होंने चार आमने सामने के पेड़ों पर बहुत तेज रोशनी वाले चार फोकस लगा दिये।
नानाजी इन्होंने रोशनी के लिये फोकस तो लगा दिये लेकिन यह इन्हें जलाएंगे कैसे? बिजली तो यहां है नहीं!
बिजली नहीं, जनरेटर तो है इनके पास. यह जो घूं घूं की आवाज आ रही है शायद यह जनरेटर ही है!
एकाएक वह जगह बहुत तेज रोशनी से जगमगा उठती है। नानाजी और कालिया की आंखें भी बुरी तरह चुंधिया जाती हैं।
कालिया, उन्होंने जनरेटर चालू कर दिया है।
अरे कुछ लोग जल्दी से भूतों की ड्रेस पहनकर नाचना कूदना शुरू कर दो ताकि लोग डरकर इधर न आ सकें। और कुछ लोग जहाज़ से चरस-गांजे की पेटियां उतारकर हमारी गाड़ी में रख आओ। जल्दी जल्दी काम करो सब लोग।
ओह तो यह चक्कर है! यह बदमाश यहां पर चरस गांजे की तस्करी करके यहां माल उतारते हैं और कोई गांव वाला इधर न आए इसलिये उन्हें डराने के लिये भूतों को नचाते हैं। बारह बजे यह काम शुरू करते हैं और दो बजे माल ढोकर चले जाते हैं!
अब हमें क्या करना चाहिये, नानाजी?


तभी नीचे एक बदमाश भागता हुआ बॉस के पास आया।
बॉस, पुलिस को न जाने कैसे हमारी इस भूतों की बारात वाली चाल का पता चल गया है। दो जीपों में भरकर पुलिस फोर्स इधर ही आ रही है!
भागो खतरा नज़र आ रहा है!
पुलिस का नाम सुनकर वहां भगदड़ मच गई भूतों की बारात में नाच रहे लोग भी जहाज़ की तरफ भागे!
कालिया इनमें से एक व्यक्ति भी भागने न पाए। तुम अपना बड़ा रूप करके ऊपर कूद पड़ो ताकि यह सब तुम्हारे नीचे दब जाएं।
अभी लो नानाजी।
कालिया अपना विशालकाय शरीर बनाकर भूतों की बारात पर कूद पड़ता है!
या-हू
शाबास कालिया।
भूत के बच्चो बचकर कहां जाओगे इस भूत के बाप से!


नानाजी पेड़ से उतरकर ट्रक के पहियों की हवा निकाल देते हैं।
अब भागकर कहां जायेगा यह बॉस का बच्चा।
तभी बॉस भागता हुआ ट्रक के पास आया।
अरे इसके पहियों की तो किसी ने हवा ही निकालदी अब मुझे इसे छोड़कर वैसे ही भाग जाना चाहिये।
भागकर कहां जाता है हरामी के पिल्ले आज तू कानून के हाथों से नहीं बच सकता।
हाय मरा।
तभी वहां पर गिट्टू पुलिस को लेकर आ जाता है।
वो देखिये इन्सपेक्टर साहब। नानाजी उस बदमाश को छड़ी से मार रहे हैं!
सिपाहियो पकड़ो इन बदमाशों को! कोई भी भागने न पाये।


इन्सपैक्टर साहब यह लोग चरस गांजे की तस्करी करते थे और गांव वालो को कुछ मालुम न चले इसलिये भूत बनकर लोगो को डराया करते थे। इस ट्रक मे चरस गांजे की पेटियां है तथा यह जहाज भी इन्हीं लोगो का है!
नानाजी इनके और आदमी कहां है?
वो देखिये कालिये के नीचे दबे पड़े हैं। भागने की कोशिश कर रहे थे भूतों की बारात के बाराती!
अब खड़े हो जाओ कालिया, पुलिस आ गयी है।
सिपाहियो, इन बदमाशों को भी गिरफ्तार करके जीप मे बिठा दो। और इनके जहाज़ की तलाशी लेकर उसे भी अपने कब्जे में कर लो!
नानाजी आपकी वजह से तस्करो का इतना बड़ा गिरोह पकड़ा गया। इसके लिये सरकार तो बहुत बड़ा इनाम देगी ही लेकिन मैं भी आपको बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ। साथ में टाईगर गिट्टू और कालिया को भी।
नानाजी सब गांव वालों की तरफ से आपको धन्यवाद। आपने यहां के लोगों को एक बहुत बड़ी मुसीबत से छुटकारा दिला दिया। वरना इस भूतों की बारात के डर से दिन छिपने के बाद कोई भी गांव वाला अपने खेत में काम करने नहीं जाता था।
इसमे धन्यवाद वाली कोई बात नहीं है भाइयो! यह तो मेरा फर्ज था।
नानाजी जिन्दाबाद!
गिट्टू कालिया टाईगर ज़िन्दाबाद!
नानाजी ज़िन्दाबाद!
नानाजी ज़िन्दाबाद!

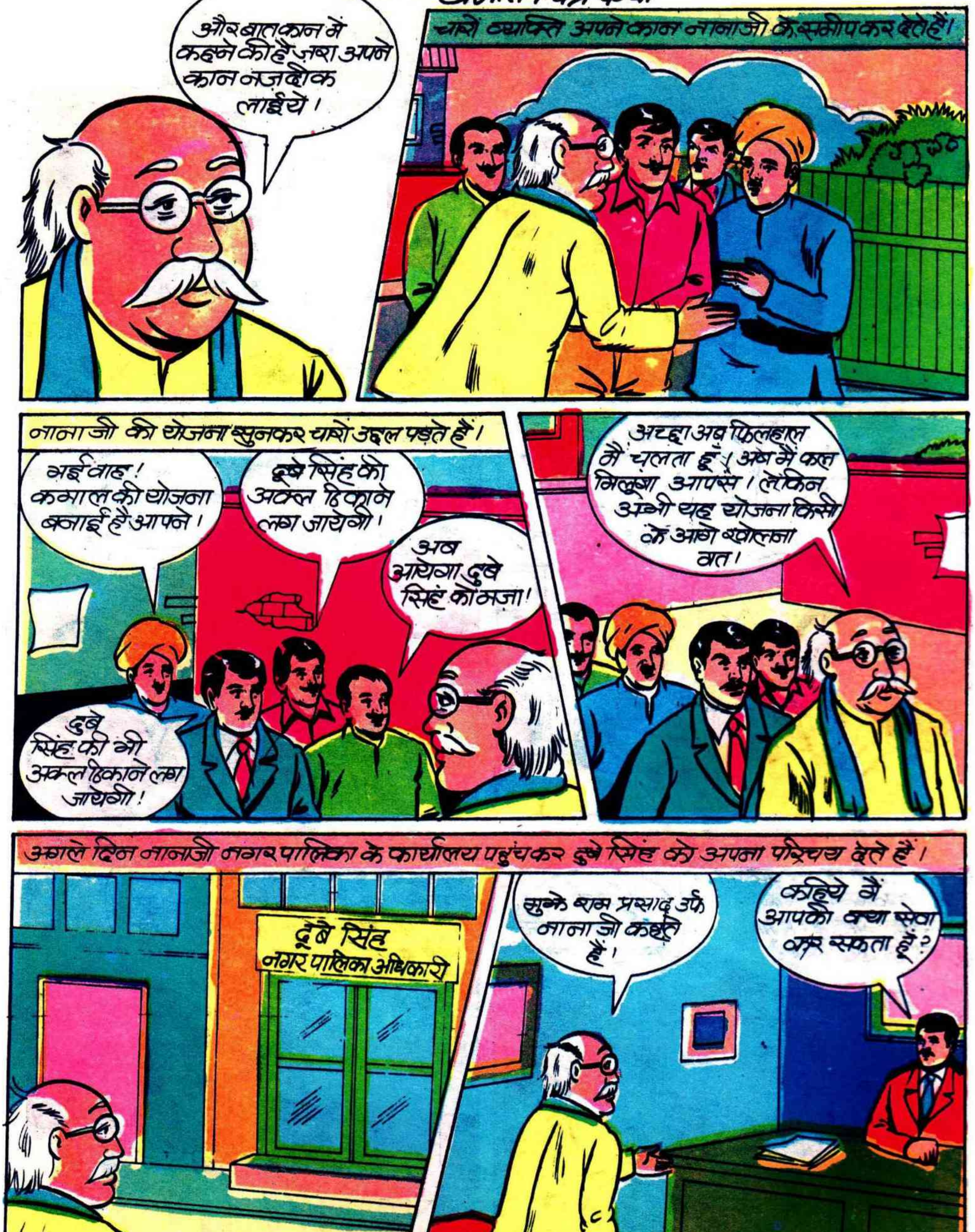

बेईमान अफसर
एक दिन नानाजी के पास बस्ती के कुछ लोग अपनी समस्या लेकर आये।
आइये शर्मा जी, भटनागर साहब, गुप्ता जी और कौशिक जी, कहिये कैसे तकलीफ की आपने ?
नानाजी बस क्या बताएं आपको, हम लोग काफी दिनों से बहुत परेशान हैं।
लेकिन क्यों ? आपकी परेशानी क्या है ?
नानाजी, हमारी बस्ती की एकमेन रोड पर 'सीवर होल' खुला पड़ा है।
उसके खुला पड़ा होने से कल गुप्ताजी को स्कूटर से चोट लग गयी!
उस पर ढक्कन न होने की वजह से कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं।
आज कौशिक जी का छोटा बच्चा उसमें गिरने से बचा।
अगर वह खुला पड़ा रहा तो आये दिन किसी न किसी की जान लेता रहेगा रोज़ कोई न कोई दुर्घटना होती रहेगी।
अरे आप लोग खड़े क्यों रह गये ? आइये बैठ कर बातें करते हैं।


नानाजी के लान में बिछी कुर्सियों पर चारों व्यक्ति बैठ जाते हैं।
हां, बताइये, आप लोग क्या कह रहे थे?
हम बस्ती की मेन रोड पर खुले पड़े 'सीवर होल' के बारे में कह रहे थे!
अगर उसमें किसी तरह ढक्कन लग जाए तो हमारी एक बहुत बड़ी समस्या हल हो जायेगी!
लेकिन आपको यह शिकायत तो नगर पालिका के सड़क बनाने वाले अफसर से करनी चाहिये।
यही तो हमारी समस्या है नानाजी कि वह अफसर हमारी अनेकों बार की शिकायत के बावजूद भी उसने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।
लेकिन क्यों?
इसलिये कि वह अफसर बेईमान है नानाजी!
चाहता क्या है वह?
रिश्वत लेकर काम करना चाहता है।
पूरे पांच सौ रुपये मांग रहा है इस काम के लिये!

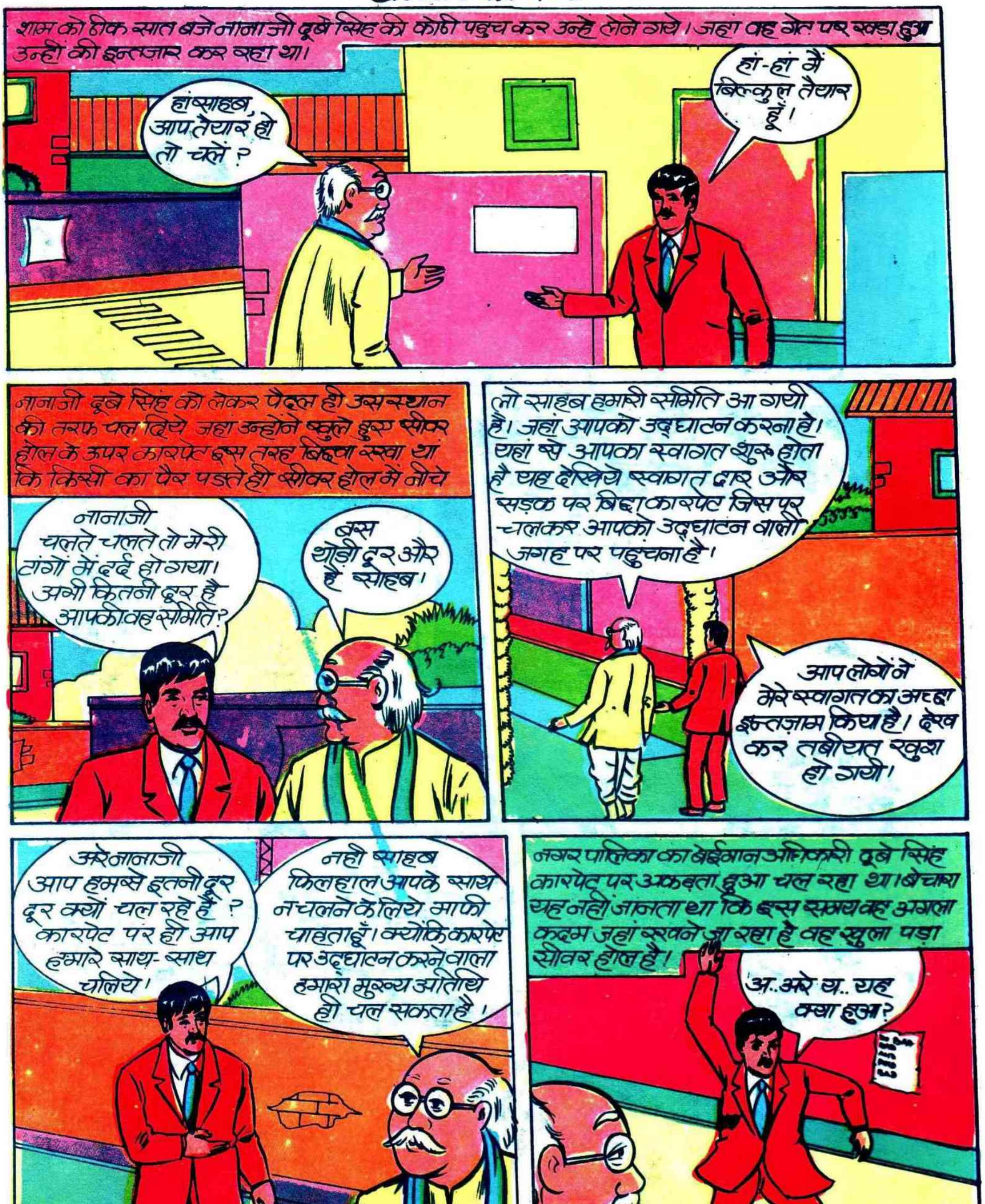

इस अफसर से कैसे निबटा जाये ? उस बेईमान अफसर को भी रिश्वत लेने का मज़ा मिल जाये और इन बेचारे लोगों की समस्या हल हो जाये।
क्या सोचने लगे आप नाना जी ?
हमें अब आखरी उम्मीद आप से ही है। आप ही किसी तरह हमारी इस समस्या को दूर कर सकते हैं।
हम आपके पास बड़ी उम्मीद लेकर आये हैं नानाजी।
आपके अलावा हमारी इस समस्या को कोई दूर नहीं कर सकता।
मैं भी आप लोगों की इस समस्या के ही बारे में सोच रहा हूं।
तो नानाजी क्या सोचा आपने?
पहले आप लोग चलकर मुझे वह खुला हुआ 'सीवर होल' दिखाइये! उसे देखकर ही मैं उस बेईमान अफसर को मज़ा चखवाने की योजना तैयार करूंगा।
यह सुनते ही चारों खड़े हो गये।
चलिये नानाजी।
हम आपके बहुत आभारी होंगे नानाजी।


इन बेचारों की समस्या को किसी तरह दूर करनी ही है। किस तरह दूर करना है यह उस 'सीवर होल' को देखकर ही शायद दिमाग में कुछ आये।
चलिये आप सब, मैं आपके साथ चलकर स्थिति को देख लेता हूँ।
वे चारों व्यक्ति नानाजी को बस्ती की मेन रोड पर बीचों-बीच खुले पड़े सीवर होल को दिखाते हैं।
यह देखिये नाना जी सीवर होल जिसे मौत का कुआं कहा जाये तो कोई गलत नहीं।
अरे यह तो सचमुच बहुत खतरनाक है। इसमें तो तुरन्त ढक्कन लगना चाहिये।
इसलिये तो हम आपके पास आये थे नानाजी।
उस बेईमान अफसर का नाम क्या है शर्मा जी ?
दूबे सिंह!
नानाजी दूबे सिंह को मज़ा चखाने के बारे में सोचने लगे।
अगर इस बेईमान अफसर दूबे सिंह को किसी दिन धोखे से लाकर इस 'सीवर होल' में ही किसी तरह गिरा दिया जाये तब उसे लोगों की परेशानी का पता चलेगा।


नानाजी को सोचते देखकर भटनागर साहब पूछ ही बैठे।
नानाजी अब क्या सोचा आपने? कोई योजना तैयार हुई?
योजना तो तैयार हो गयी है। लेकिन उसमें आप लोगों की मदद की जरूरत पड़ेगी!
आप हुक्म करिये नानाजी, हम आपकी किसी भी तरह की मदद करने को तैयार हैं!
हमें क्या करना है आप हमें फौरन बताइये!
आप जैसा कहेंगे वैसा ही होगा नानाजी!
उस बेईमान अफसर को रुपये देने के अलावा आप कुछ और भी बता दीजिये नानाजी!
अरे आप लोग फिक्र मत करो कौशिकजी, मेरी योजना ऐसी ही है कि उल्टा वह बेईमान दुबे सिंह आपको रिश्वत देगा!
सुनकर चारों बुरी तरह चौंक पड़ते हैं।
ह.. हमें दुबे सिंह रिश्वत देगा!
य.. यह आप क्या कह रहे हैं नानाजी?
हम बिल्कुल सही कह रहे हैं। इस सीवर होल में वह ढक्कन तो तुरन्त लगवायेगा ही साथ में आप को रिश्वत भी देगा। हमारी योजना ही कुछ ऐसी है।
लेकिन आपकी वह योजना क्या है नानाजी?
आप लोगों को केवल इतना काम करना है कि कल इस सीवर होल पर कारपेट बिछाकर इस तरह ढक देना है कि किसी को यह गुमान न हो सके कि यहां खुला हुआ सीवर होल भी है बल्कि ऐसा नजर आना चाहिये कि किसी के स्वागत की तैयारियां की गयी हो और....


और बात कान में कहने की है जरा अपने कान नज़दीक लाईये।
चारो व्यक्ति अपने कान नानाजी के समीप कर देते हैं।
नानाजी की योजना सुनकर चारो उछल पड़ते हैं।
भई वाह! कमाल की योजना बनाई है आपने।
दूबे सिंह को अक्ल ठिकाने लग जायेगी।
अब आयेगा दूबे सिंह को मजा!
दूबे सिंह की भी अक्ल ठिकाने लग जायेगी!
अच्छा अब फिलहाल मैं चलता हूं। अब मैं कल मिलूंगा आपसे। लेकिन अभी यह योजना किसी के आगे खोलना मत।
अगले दिन नानाजी नगर पालिका के कार्यालय पहुंचकर दूबे सिंह को अपना परिचय देते हैं।
दूबे सिंह
नगर पालिका अधिकारी
मुझे राम प्रसाद उर्फ नाना जी कहते हैं।
कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?


ऐसा है साहब, हमने अपनी बस्ती में एक सुधार समिति बनाई है जिसका उद्‌घाटन हम आपके कर कमलों से करवाना चाहते हैं!
आप बैठिये, मैं आप के लिये चाय नाश्ता वगैरह मंगवाता हूं!
उद्‌घाटन करवाने की बात सुनकर दूबे सिंह मन ही मन फूला नहीं समाया। उसने तुरन्त चपरासी को आदेश दिया।
सुनो, नानाजी के लिये बढ़िया नाश्ता तथा चाय लेकर आओ, जल्दी!
अभी लाया साब।
थोड़ी देर में चपरासी नाश्ता चाय वगैरा ले आया था जिसे बहुत आग्रह पूर्वक दूबे सिंह ने नानाजी को कराया था। नाश्ता कराने के बाद वह बोला.....
तो आपका उद्‌घाटन कराने वाला कब का प्रोग्राम है!
आज शाम सात बजे।
ठीक है नानाजी, मैं आज शाम ठीक सात बजे आपकी बस्ती में उद्‌घाटन करने आ जाऊंगा।
आप जैसे बड़े अफसर अकेले जाते हुए अच्छे नहीं लगेंगे। मैं शाम को खुद आपको लेने आऊंगा साहब!
जैसी आपकी इच्छा नानाजी! इसमें मैं क्या कह सकता हूँ!
धन्यवाद, अच्छा साहब, अब मैं चलता हूं। शाम को मैं आप को लेने आऊंगा।
ठीक है मैं शाम सात बजे आपका इन्तज़ार करूंगा नानाजी!
आज शाम तेरी अक्ल भी ठिकाने लग जायेगी बेटे रिश्वतखोर!


शाम को ठीक सात बजे नाना जी दूबे सिंह की कोठी पहुंच कर उन्हें लेने गये। जहां वह गेट पर खड़ा हुआ उन्हीं की इन्तजार कर रहा था।
हां साहब, आप तैयार हो तो चलें ?
हां-हां मैं बिल्कुल तैयार हूं।
नानाजी दूबे सिंह को लेकर पैदल ही उस स्थान की तरफ चल दिये जहां उन्होंने खुले हुए सीवर होल के ऊपर कारपेट इस तरह बिछवा रखा था कि किसी का पैर पड़ते ही सीवर होल में नीचे
नानाजी चलते चलते तो मेरी टांगों में दर्द हो गया। अभी कितनी दूर है आपकी वह समिति?
बस थोड़ी दूर और है साहब।
लो साहब हमारी समिति आ गयी है। जहां आपको उद्घाटन करना है। यहां से आपका स्वागत शुरू होता है यह देखिये स्वागत द्वार और सड़क पर बिछा कारपेट जिस पर चलकर आपको उद्घाटन वाली जगह पर पहुंचना है।
आप लोगों ने मेरे स्वागत का अच्छा इन्तज़ाम किया है। देख कर तबीयत खुश हो गयी।
अरे नानाजी आप हमसे इतनी दूर दूर क्यों चल रहे हैं ? कारपेट पर ही आप हमारे साथ-साथ चलिये।
नहीं साहब फिलहाल आपके साथ न चलने के लिये माफी चाहता हूँ। क्योंकि कारपेट पर उद्घाटन करने वाला हमारा मुख्य अतिथि ही चल सकता है।
नगर पालिका का बेईमान अधिकारी दूबे सिंह कारपेट पर अकड़ता हुआ चल रहा था। बेचारा यह नहीं जानता था कि इस समय वह अगला कदम जहां रखने जा रहा है वह खुला पड़ा सीवर होल है।
अ..अरे य..यह क्या हुआ?


दुबे सिंह एकदम सीवर होल के अन्दर जा पड़ा।
हाय मैं मरा, बचाओ!
नानाजी उसे दिखाने के लिये झूठ मूठ कोशिश करते हैं।
साहब मैं आपको बाहर निकालने की कोशिश करता हूं!
मुझे जल्दी बाहर निकालिये नानाजी!
DO BAD AND FIND BAD.
मुझे अकेले से आप नहीं निकलेंगे साहब! कुछ आदमियों को बुलाना पड़ेगा।
जल्दी बुलाकर लाइये नानाजी!
मैं कुछ लोगों को बुलाकर अभी लाया साहब!
नानाजी थोड़ी देर में ही लौट आये।
साहब आपका नाम सुनकर इस बस्ती का कोई आदमी आने के लिये तैयार नहीं है। कहते हैं आपने इस सीवर होल में ढक्कन लगाने के पांच सौ रुपये मांगे थे!
नानाजी मैं इस सीवर होल में अभी ढक्कन लगवा दूंगा लेकिन मुझे उन लोगों से कहकर तुरन्त बाहर निकलवाओ!
लेकिन साहब, वह चारों आदमी कह रहे हैं कि अब इसमें ढक्कन लगवाने के साथ साथ पांच पांच सौ रुपये लेकर ही आप को बाहर निकालेंगे!
मरता क्या न करता।
नानाजी मैं उन लोगों को पांच-पांच सौ रुपये भी दूंगा पर आप जल्दी से बुलाएं। मेरे हाथ बुरी तरह दुख गये हैं।
उनके तैयार होते ही नानाजी तुरन्त आवाज़ लगाते हैं।
शर्माजी, कौशिक जी, भटनागर साहब और गुप्ता जी आप आकर साहब को निकालिये! इन्हें आप की शर्तें मंजूर हैं!



Printers: GATEWAY PAPERS PVT. LTD Ph. 7125756
C 55, WAZIRPUR INDUSTRIAL AREA, DELHI-110052

प्रभात पाकेट बुक्स के नये सैट की पुस्तकें

खूनी प्रलय	(नया उपन्यास)	कुमार कश्यप	6/-
बदचलन		व्ही० व्हानवी	6/-
कमरे में लाश		वेद प्रकाश काम्बोज	6/-
हास्य पिटारा		राजेश अरोरा 'शलभ'	6/-
मौत का साया		जेम्स हेडली चेईज	6/-
विक्रान्त की लाश के सौदागर		कुमार कश्यप	6/-
विक्रान्त और शाका		ओम प्रकाश शर्मा	6/-
विक्रान्त और हिचकॉक		ओम प्रकाश शर्मा	6/-
विक्रान्त और जैकाल		ओम प्रकाश शर्मा	6/-
विक्रान्त और शैतान		ओम प्रकाश शर्मा	6/-
हिन्दी-इंगलिश बोलचाल		श्रीमति गोहर जहां	6/-

राजन इकबाल सीरीज के बाल उपन्यास

दो जासूस	(बाल उपन्यास)	एस० सी० बेदी	3/-
चार लुटेरे	(बाल उपन्यास)	एस० सी० बेदी	3/-
खूनी मौत	(बाल उपन्यास)	एस० सी० बेदी	3/-
मौत का फंदा	(बाल उपन्यास)	एस० सी० बेदी	3/-

※ इसी माह में प्रकाशित पुस्तकें

१५५१ विक्रांत और मुर्दा महल १०)	कुमार कश्यप
१५५२ अधूरी प्यास ६)	चंचल
१५५३ विषैली गैस ६)	वेद प्रकाश काम्बोज
१५५५ खतरनाक कदम ६)	जेम्स हेडली चेईज
१५५६ मर्डर ऑन हाइवे ६)	हैलन
१५५७ विक्रांत इजराईल में ६)	ओम प्रकाश शर्मा
१५५८ विक्रांत प्रेत के जाल में ६)	ओम प्रकाश शर्मा
१५५९ विक्रांत और माइक्रो बम ६)	ओम प्रकाश शर्मा
१५६० वि० और मौत की कसम ६)	ओम प्रकाश शर्मा

बाल पाकेट बुक्स
एस० सी० बेदी

…२१ किरणों का नाच ३)
…२२ विमाग का अपहरण ३)
…२३ उड़न तश्तरी ३)
…२४ यमदूत का अन्त ३)

※ हमारे पास उपलब्ध अन्य पाकेट बुक्स ※

जोक्स

- शेख चिल्ली ६)
- हंसी के गोल गप्पे ६)
- पति-पत्नि के जोक्स ६)
- हसिये हसाईये ६)
- किशोर किशोरियों के जोक्स ६)
- तोता मैना ६)
- सबरंग जोक्स ६)
- ठहाके ही ठहाके ६)
- अकबर बीरबल ६)
- हास-परिहास ६)
- जीजा-साली नोंक-झोंक ६)
- चिल्ड्रन जोक्स ६)
- मोडर्न जोक्स ६)
- फिल्मी जोक्स ६)
- हुड़क चुल्लू ५)
- प्रेमी प्रेमिका जोक्स ५)
- देवर भाभी हास्य विनोद ५)
- असली किस्सा हातिमताई ५)

फिल्मी नग्में

- रफी के सुपरहिट गीत १०)
- मुकेश के सुपरहिट गीत १०)
- लता के सुपर हिट गीत १०)
- किशोर के सदाबहार गीत १०)
- किशोर के लोकप्रिय नग्में ६)
- लता के दिलकश नग्में ६)
- रफी के सदाबहार गीत ६)
- मुकेश के दर्दीले नग्में ६)
- रफी के दिलकश नग्में ३)
- मुकेश के लोकप्रिय नग्में ३)
- लता के लोकप्रिय नग्में ३)
- नई फिल्मों के लोकप्रिय गीत ३)

शायरी

- शेरो गजल ६)
- सबरंग शायरी ६)
- जश्ने शायरी ६)
- जामे शायरी ६)
- गुलदस्ता ए शायरी ६)

प्रेम बाजपेयी

- कटीले तार ६)
- मोहब्बत बदनाम हो गई ६)
- लैम्प पोस्ट ६)
- लकीरें बोलती हैं ५)

जनप्रिय लेखक ओम प्रकाश शर्मा

- खतरे की घन्टी ६)

कुमार कश्यप

- श्रीमान चार सौ बीस ६)
- कफन की वसीयत १०)
- मौत का पैगाम ६)
- लाश के सात कदम १०)
- दगा फसाद ६)
- जगत और जेम्स बांड १०)

वेद प्रकाश काम्बोज

- भूतों का पर्वत ६)
- एक खूनी रात ६)
- नकली नोट ६)
- मौत की भूल भुलैया ६)

हैलन

- हत्यारे का जाल ६)
- बर्निंग क्लब ६)
- शैल ६)
- डार्क रूम ६)

जेम्स हेडली चेईज

- मौत के फरिश्ते ६)
- आखरी शाम ६)
- बेगुनाह कातिल ६)
- जालिम लुटेरे ६)
- कत्ल का सिलसिला ६)

जनरल बुक्स

- प्राकृतिक चिकित्सा १०)
- यंत्र साधना ६)
- तन्त्र साधना ६)
- जूडो-कराटे बाक्सिंग)
- सम्पूर्ण आरती संग्रह ६)
- पौराणिक वृत कथा संग्रह ६)

ओम प्रकाश शर्मा

- वि० और मादाम सांग ६)
- मादाम सांग की टक्कर ६)
- वि० अपराधी के जाल में ६)
- विक्रान्त कम्पूचिया में ६)
- विक्रांत की मौत १०)

चंचल

- रात की रानी ६)

शैलेन्द्र

- गोली नहीं चलेगी ६)

दिनेश

- अमर बेल ६)

बाल पाकेट बुक्स
एस० सी० बेदी

२५ खूनी दरिन्दे ३)
२६ खूनी चिंगारी ३)
२७ खूनी जादूगर ३)
२८ दहकती चिंगारी ३)
१७ काली आग ३)
१८ आग का दरिया ३)
१९ मिस्टर फ्राड ३)
२० फ्राड की मौत ३)

याद रखिये कुमार कश्यप के नये उपन्यास अब केवल प्रभात पाकेट बुक्स, से ही प्रकाशित होते है अन्य कहीं से नहीं ….. ।



http://manojcomicsworld.blogspot.com